चन्दामामा
जनवरी १९६३
50

डाबर
(डा. एस. के. बर्म्मन)
प्राइवेट लि०
कलकत्ता
लालशर
(डाबर. बालामृत)
कैल्सियम
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
'पुष्टई' में
बच्चों को
सुलभ हैं
खेलने-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत

चन्दामामा

जनवरी १९६२

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय नृत्य कलाकार
कमला लक्ष्मण
की
प्रशंसा पात्र
फेशन
नमूना
इन
के लिए
रंग रंग के
सभ्यता
श्री
वेन्कटेश्वर
सिल्क साड़ियाँ
श्री वेन्कटेश्वर
सिल्क पैलेस
"ROOPMANDIR"

चन्दामामा

संपादक: चक्रपाणी

भारत संकट में से गुजर रहा है। हमारी सेना चीनियों से लोहा ले रही है। सारा देश उनसे मुकाबला करने के लिए सन्नद्ध हो रहा है।

युद्ध कालीन परिस्थितियों में कागज उतनी आसानी से न मिल सकेगा। सम्भव है कि हमें परिणामतः कई "चन्दामामा" के पाठकों को निराश करना पड़े।

ऐसी अवस्था में हम चाहेंगे कि आप "चन्दामामा" पढ़ने के बाद, औरों को भी दें ताकि वे निराश न हों।

वर्ष: १४ जनवरी १९६३ अंक: ५

भारत का इतिहास

हम अभी तक वही इतिहास प्रस्तुत करते आये हैं, जो भारत में ही हुआ। यानि यहाँ स्थापित साम्राज्य, राजवंशों के बारे में ही हमने लिखा। लिखते लिखते हम मुसल्मानों के आक्रमण तक आये। इससे पहिले कि हम बाद की घटनाओं के बारे में लिखें, हम चाहेंगे कि उस इतिहास के बारे में लिखें, जो भारत भूमि में तो नहीं हुआ, पर जो अन्यत्र भारत से सम्बद्ध है।

अनादिकाल से भारत के अन्य देशों से सम्बन्ध थे। भारतीय, भूमि पर से, अथवा समुद्रों को पार करके और देशों में गये थे। एक समय में भारत, बेबिलोनिया, सीरिया, मिस्र आदि में व्यापारिक सम्बन्ध थे। ईसा की पहिली सदी से इन व्यापारिक सम्बन्ध में हमें काफ़ी जानकारी मिलती है।

व्यापार के साथ भारत की संस्कृति और सभ्यता भी और देशों में गई। अशोक के बौद्ध प्रचारक, पश्चिम एशिया, उत्तर अफ्रीका, यूरुप के कुछ भागों में भी गये। वहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार भी हुआ।

भारतीयों ने पश्चिम से रोमन ज्योतिष शास्त्र, ग्रीक कलायें, सिक्कों का बनाना आदि सीखा। भारत का औषध, शासन और दशांश गणित, अरबों द्वारा संसार में व्याप्त हुए।

मध्य एशिया में, कुशान राजाओं के कारण, केस्पियन समुद्र से चीन की दीवार तक बौद्ध धर्म प्रचलित हुआ। जब सातवीं सदी में, हुएन त्सांग, चीन से, मध्य एशिया में से होता हुआ भारत पहुँचा, तो उसको रास्ते में सब जगह भारतीय संस्कृति

ही दिखाई दी। बौद्ध धर्म मध्य एशिया से चीन पहुँचा।

ईसाके दूसरी सदी से, भारतीयों का दूसरे देशों में शासन स्थापित करने के बारे में विवरण मिलते हैं। उन देशों में मलाया, कम्बोडिया, स्याम, सुमात्रा, जावा, बालि, बोर्नियो में भारतीय प्रथायें धर्म, भाषा, लिपि, नाम वगैरह प्रचलित थे। वहाँ शैव मत और बौद्ध धर्म व्याप्त थे।

विदेशों में भारतीयों द्वारा स्थापित साम्राज्य हजार वर्ष तक रहे। भारत में जब हिन्दुओं का शासन समाप्त हो चुका था, तब भी ये साम्राज्य बने रहे। इन्डोचीन में चम्पा कम्बुजा नाम के दो राज्य थे। चम्पा के राजा जयपरमेश्वर वर्मदेव ईश्वरमूर्ति (१०५०-१०६०) रुद्रवर्मा (१०६१-१०६९) हरिवर्मा (१०७०-१०८१) महाराजाधिराज श्री जय इन्द्रवर्मा (११६२-११८०) जयसिंहवर्मा (१२५७-१२८७) बड़े वीर थे। इन्हें कुबलाय खान भी आसानी से न हरा सका। यह हिन्दू राज्य १६ वीं सदी में मंगोलों द्वारा हरा दिया गया।

कम्बुज राज्य शायद पहली पहिली या दूसरी सदी में रहा होगा। यह आज का दक्षिण कम्बोडिया है। "यहाँ हजार ब्राह्मणों से अधिक हैं। उनके साथ यहाँ के निवासियों ने अपनी पुत्रियों का विवाह किया। वे अहोरात्र पठन पाठन करते रहते हैं।" इस प्रकार एक चीन के लेखक ने लिखा था। यहाँ के राजाओं में प्रसिद्ध थे यशोवर्मा और द्वितीय सूर्यवर्मा। यह राज्य १५ हवीं सदी में विच्छिन्न हो गया।

चम्पा की अपेक्षा कम्बुज बड़ा था। इसकी शक्ति भी अधिक थी। कभी कम्बोडिया, कोचिन-चीन, लाओस, स्याम, मलाया, बर्मा के कुछ भाग इसमें थे।

कम्बुज राजाओं के इतिहास के बारे में वहाँ बहुत से शिलालेख मिलते हैं, जो संस्कृत में हैं। उनकी महत्ता को दिखानेवाले दो अद्भुत देवालय अब भी हैं, अंगकोरवाट और अंगकोरथाम।

अंगकोरवाट संसार के आश्चर्यों में गिना जाना चाहिये। यह पहिले विष्णु का मन्दिर था। इसमें बहुत-से गोपुर थे। बीच के गोपुर की ऊँचाई २१३ फीट है। आलय के आँगन में शिल्प हैं। अंगकोर थाम जयवर्मा द्वारा निर्मित राजधानी नगर है। यह दो वर्ग मील है। इसके चारों ओर पत्थर की दीवार है और ३३० फीट की खाई भी है। ("संसार के आश्चर्य" दिसम्बर, देखिये)

मलाया द्वीप समूह के इण्डियन उपनिवेशों में दो हिन्दू राजवंशों का उद्भव और ह्रास हुआ। शैलेन्द्र वंश की स्थापना ८ वीं सदी में हुई। कहा जाता है कि मलाया का "सम्राट" चम्पा और कम्बुज देशों पर आक्रमण किया करता था, उसकी एक दिन की आमदनी २०० मन सोना थी, प्रति दिन सबेरे वह झरने में एक सोने का सिक्का फेंक देता था—ये बातें इतिहासकारों ने लिखी हैं।

शैलेन्द्र पर प्रथम राजेन्द्र चोल ने ११ वीं सदी में आक्रमण करके उसका कुछ राज्य ले लिया। १३ वीं सदी में शैलेन्द्र राजा ने लंका पर आक्रमण किया और पराजित हुआ। इसके बाद शैलेन्द्र का प्रभाव क्षीण होता गया। फिर जावा में हिन्दूराज्य का केन्द्र बना। परन्तु १५ वीं सदी में वहाँ इस्लाम धर्मावलम्बियों ने आक्रमण किया।

पवनवेग - सा आ पहुँचा वह
ब्रह्माजी के पास,
सुनकर सारी बातें उसकी
मुखपर बिखरा हास।

बोले वे—"हे इन्द्र, अभी तक
नहीं सके उसको पहचान,
वह तो पुत्र परमशिव का है
लो इसको शुभ जान।

तारकासुर जो पृथ्वी पर
करता अत्याचार,
अंत उसीका करने उसने
लिया अभी अवतार।

अभी - तुम्हीं सेना ले आओ
और साथ शिव को भी कर लो,
कुमार को अब सेनानायक
बना पूर्ण आशाएं कर लो।"

शिव से जाकर कहा इन्द्र ने
सब सारा ही हाल,
पार्वती को संग लिये वे
हुए साथ तत्काल।

ब्रह्माजी भी सब देवों को
लिए वहाँ पर आये,
कुमार का अभिषेक वहीं पर
करने को वे आये।

पार्वती - शिव से देवों की
शोभित हुई कतार,
इतने में आये तेजोमय
हँसते तरुण कुमार।

आशीर्वाद दिये ब्रह्मा ने
बोले—"सुनो कुमार,
देवों के सेनापति - पद को
करो तुम्हीं स्वीकार!"

मणिमय पीढ़ा ले आये तब
तुरत वहाँ हिमवान,
बृहस्पति ने शुरू किया झट
शुभ मंत्रों का गान।

पूर्णकुम्भ ले अपने कर में
खड़े सामने इन्द्र हुए,
किया प्रथम अभिषेक उन्होंने
कुमार भी मनमुदित हुए।

देव दुंदुभि लगे बजाने
नभ से फूल गिराने,
लगीं नाचने अप्सरायें
गंधर्व लगे सब गाने।

बने कुमार देवसेनापति
दिये इन्द्र ने शस्त्र,
और पार्वती ने पुलकित हो
दिये रेशमी वस्त्र।

मयूरासन देकर गरुड़ ने
उसपर तुरत बिठाया,
देवों के गुरु बृहस्पति ने
आशीर्वाद वेद पढ़ाया।

सहज भाव से मुस्काये शिव
आगे आये बढ़कर,
भूतगणों की सेना अपनी
दे दी सारी हँसकर।

कुमार ने तब उसी समय झट
उठा हाथ में शंख लिया,
और ओठ से लगाकर उसको
बहुत जोर से फूंक दिया।

शंखनाद वह सुन देवों को
हुआ बड़ा आनन्द,
उधर तारकासुर की किस्मत
का हुआ सितारा मंद।

★ [समाप्त] ★

बलवान और बहादुर का तुम्हारे साथ होना तुम्हारे लिए अधिक फायदे की बात है।" फिर वह म्यान में से तलवार निकालकर इधर उधर घुमाने लगा। व्यापारियों को उस पर दया आ गई। उन्होंने मोटे सरदार के पास आकर उसकी पीठ पर थपथपाते हुए कहा—"हमसे तुम्हारी बहादुरी छुपी नहीं है। चाहो तो हमारे साथ आओ। तुम्हें कुछ नहीं देना होगा। पर कपिलपुर से किस तरह वापिस जाओगे! तुम्हारी गैर हाज़िरी में तुम्हारे नौकर डेरे उठाकर भाग गये तो क्या करोगे!"

"उनकी हड्डी पसली एक कर दूँगा। मेरा नाम सुनते ही वे काँपने लगते हैं। पूछ रहे हो कि कपिलपुर से किस तरह वापिस आऊँगा! मैं जानता हूँ कि कितने ही लोग कपिलपुर से इस जंगल में आते जाते रहते हैं।"

इसके बाद, फिर सब पैदल चलने लगे। जंगल में कुछ दूर जाने के बाद रास्ता एक घाटी में मुड़ा। वह घाटी बड़ी गहरी थी। उसमें एक नदी बह रही थी। पहाड़ की चोटी से नीचे घाटी में, जहाँ नदी बह रही थी, बड़े बड़े पेड़ोंवाला घना जंगल

था। पेड़ों पर इतनी बेलें लिपटी हुई थीं कि प्रकाश ही मुश्किल से घुस पा रहा था। जंगल बड़ा भयंकर मालूम पड़ता था।

केशव ने जंगल में आते जयमल्ल से धीमी आवाज़ में कहा—"मल्ल, यदि हम इन दुष्टों से बचना चाहें तो हम दोनों के लिए यहाँ से नदी में कूद जाना शायद अच्छा होगा। क्यों? तुम क्या कहते हो?"

जयमल्ल ने एक बार घाटी में देखा, उसने कहा—"यदि हम बिना पेड़ों से टकराये सीधे नदी में आ कूदें तो कोई खतरा नहीं है। नहीं तो...." उसने अभी

अपना वाक्य पूरा न किया था कि रास्ता दिखानेवाला व्यापारियों का नौकर ज़ोर से चिल्लाया। सामने के पत्थरों के पीछे से, पेड़ों के पीछे से, बड़ी बड़ी तलवार घुमाते कुछ नरमांस भक्षकों ने "चण्डमण्डूक की जय" चिल्लाते भूतों की तरह अट्टहास करते हुए उन पर हमला किया।

"बाण.....तलवार.....भाले....." धीमे धीमे दोनों मुलुकों के व्यापारी दो कदम पीछे हटते चिल्लाये। "केशव, जगन्नाथ तुम्हें ही हमें इन नरभक्षकों से बचाना होगा। हम तुम्हें आज़ाद कर देंगे।"

केशव और जगन्नाथ ने चुटकी भर में निर्णय कर लिया। नरभक्षकों के हाथ पकड़े गये तो फिर आज़ादी कहाँ! यह सोच दोनों ने मुलुकों के दोनों व्यापारियों का हाथ पकड़कर नदी में कूदते हुए कहा—"यदि तुम सीधे नदी में कूद सके तो तुम आज़ाद हो सकोगे। यदि किसी पेड़ से टकराये तो मौत ही समझो।"

इस बीच नरभक्षकों ने उन मुलुकों के व्यापारियों के नौकरों को, जिन्होंने उनको रोका था, तलवार से मार दिया। फिर वे पीछे भागते हुए मोटे सरदार का पीछा करते हुए भागे। "अरे, माँस के इस ढेर को तू न भागने देंगे। हम इसे अपने सरदार को भेंट देंगे। वे ऐसा माँस छूते तक नहीं।" वे चिल्लाने लगे।

केशव, जगन्नाथ बिना किसी पेड़ से टकराये सौभाग्यवश सीधे नदी में कूदे। इस तरह गिरने से पानी के उछलने के कारण दोनों व्यापारी उनके हाथ से निकल गये। उसी समय जो जंजीर उनके गलों में डाली गई थी वह भी एकाएक टूट गई।

मुलुकों के व्यापारी पानी में डूबते तैरते हुए चिल्लाये—"बचाओ, केशव, जगन्नाथ, हम तुम्हें आज़ाद कर देंगे।"
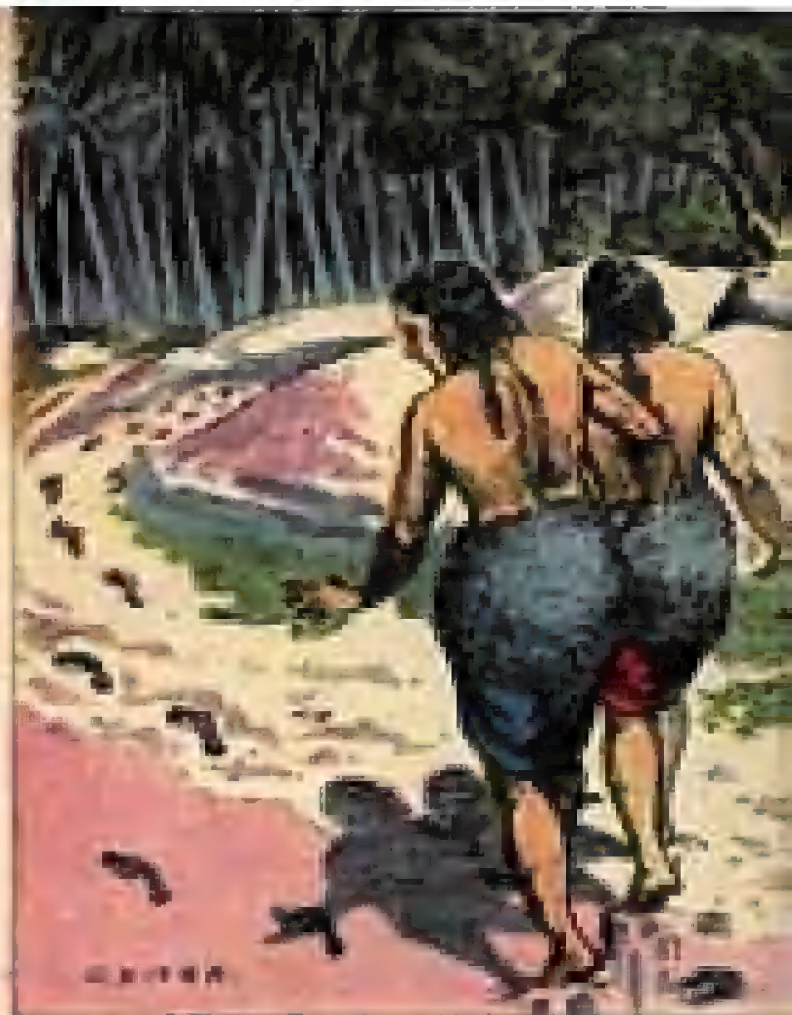
यद्यपि वे मर रहे थे, तो भी वे इस तरह चिल्ला रहे थे जैसे अब भी वे उनकी गिरफ्त में हों। यह देख केशव को बेहद गुस्सा आया। उसने जयमल्ल से कहा— "इनकी मौत पानी में नहीं है। चलो, इन नर राक्षसों का खात्मा कर दें।" यह कहता वह उनकी ओर तैर ही रहा था कि भयंकर होहल्ला सुनाई दिया और कुछ भाले भी नदी में गिरे।

"नर मांस भक्षकों ने हमें देख लिया है। अब हमारे लिए पानी के साथ बह जाना ही अच्छा है।" कहकर जयमल्ल लम्बे लम्बे हाथ मारता हुआ नदी के साथ बहता गया। उसने केशव को भी सावधान कर दिया।

नदी बड़ी तेज़ी से बह रही थी। केशव और जयमल्ल को ज्यादह हाथ मारने की ज़रूरत न थी। वे बहाव में बहते जाते थे।

एकाएक नदी में एक द्वीप-सा दिखाई दिया। जयमल्ल और केशव बहुत थक गये थे। वे आपस में कुछ इशारा करके द्वीप की ओर तैरने लगे। द्वीप में पहुँचकर उन व्यापारियों को ढूंढने लगे जिनको जबर्दस्ती उन्होंने नदी में फेंक दिया था। उनका कहीं पता न था।

केशव और जयमल्ल द्वीप में चलने लगे। वे पाँच छः कदम ही गये होंगे कि उनको रेत पर किसी के पैरों के निशान दिखाई दिये।

"यह द्वीप निर्जन नहीं है। यहाँ कोई है। कौन हो सकते हैं?" केशव ने पूछा।

"कोई भी हो। हम तो निहत्थे हैं।" जयमल्ल ने कहा।

"अरे भाई, इतने दुःखी न हो। हम अब तक कितनी ही बार मौत के मुख से निकल चुके हैं। हमें अब खतरों से डरने

की कोई जरूरत नहीं है।" कहते हुए द्वीप में रास्ता बताने लगा।

वे कुछ दूर चलकर एक टीले पर पहुँचे। उस पर चढ़कर उन्होंने चारों ओर देखा। टीले के नीचे एक समतल जगह में पचीस तीस गोल गोल झोंपड़ियाँ थीं। उन सब के चारों ओर एक ऊँचा काँटों का घेरा था। उसके सामने हाथ में एक तलवार लिये हुए व्यक्ति पहरा दे रहा था।

"यह भी शकल-सूरत से नरभक्षक-सा मालूम पड़ता है न?" केशव ने पूछा। जयमल ने भी हाँ बताते हुए सिर हिलाया।

"वह देखो, उसने हमारी ओर ही सिर हिलाया है, शायद उसने हमें देख लिया है।" यह कह कर वह पेड़ों के पीछे छुप गया। केशव भी जयमल के पीछे जाने ही वाला था कि पहरेदार जोर से चिल्लाया—"कौन है वहाँ, ठहरो...." वह उनकी ओर भागने लगा।

"केशव लगता है, उसने केवल तुम्हें ही देखा है! जब वह पास आये तो तुम उससे बातचीत करना। मैं इस बीच पीछे से उस पर हमला करूँगा और उसकी खबर लूँगा।" कहकर जयमल झुरमुटों पर रेंगता एक तरफ हट गया।

जैसा कि केशव ने अनुमान किया था, वह पहरेदार सचमुच नरभक्षक था। वह बाहें फैलाता केशव के पास आया। उसने पूछा—"अकेले हो या कोई साथ है? तुम इस द्वीप में आये कैसे?" केशव ने चोटी से एड़ी तक देखते हुए कहा—"चाहे नरम हो या सख्त, अच्छा माँस है। मैं भूखा था....मैंने सोचा कि द्वीप के देवता ने तुम्हें मेरे पास भेजा है।"

इस बीच नरभक्षक के पीछे पीछे जयमल रेंगता रेंगता आया और उसकी पीठ पर

गया। उसने ज़ोर से उसकी पीठ पर मारा। नर भक्षक ज़ोर से चिल्लाया और आगे गिर गया। उसके हाथ की तलवार दूर जा गिरी। केशव ने उसे उठा लिया और उससे नरभक्षक के सिर को फाड़ दिया।

"दोनों के लिए एक हथियार काफ़ी है।" कहते हुए जयमल ने टीले के नीचे की झोंपड़ियों को देखा। वहाँ कोई नहीं दिखाई देता था।

"यह तो कोई तमाशा मालूम पड़ता है। जंगल में जो नरभक्षक हमें मिले थे, शायद उनकी ही यह बस्ती है। वे सब तो शिकार पर चले गये और यह यहाँ अकेला रखवाली कर रहा था। क्या जाकर देखें, इन झोंपड़ियों में है क्या? फिर हम चले जायेंगे।" जयमल ने कहा।

केशव मान गया। दोनों टीले से उतरे और बिल्लियों की तरह घेरा पार करके अन्दर गये। उनके और झोंपड़ियों के बीच में एक ऊँची जगह दिखाई दी। उस पर बाँसों से बनी एक झोंपड़ी थी।

"यह शायद नरभक्षकों के सरदार का महल है।" कहता जयमल कुछ मुस्कराया। वे दोनों उसके पास गये। उन्हें अन्दर से बातें सुनाई दीं। "बताओ, मैं जान गया हूँ कि तुम कौन हो? मैं जानता हूँ कि ये ज्येष्ठ और कनिष्ठ कौन हैं। वे कहाँ हैं?" किसी का धमका धमका कर पूछना उनको सुनाई पड़ा। केशव और जयमल यह सुन हतप्रभ-सा हो गया। यह किसकी आवाज़ है? क्या कालरूपी मान्त्रिक की आवाज़ है? नहीं तो नरभक्षकों के सरदार पाण्डनाथ की है?" (अभी है)
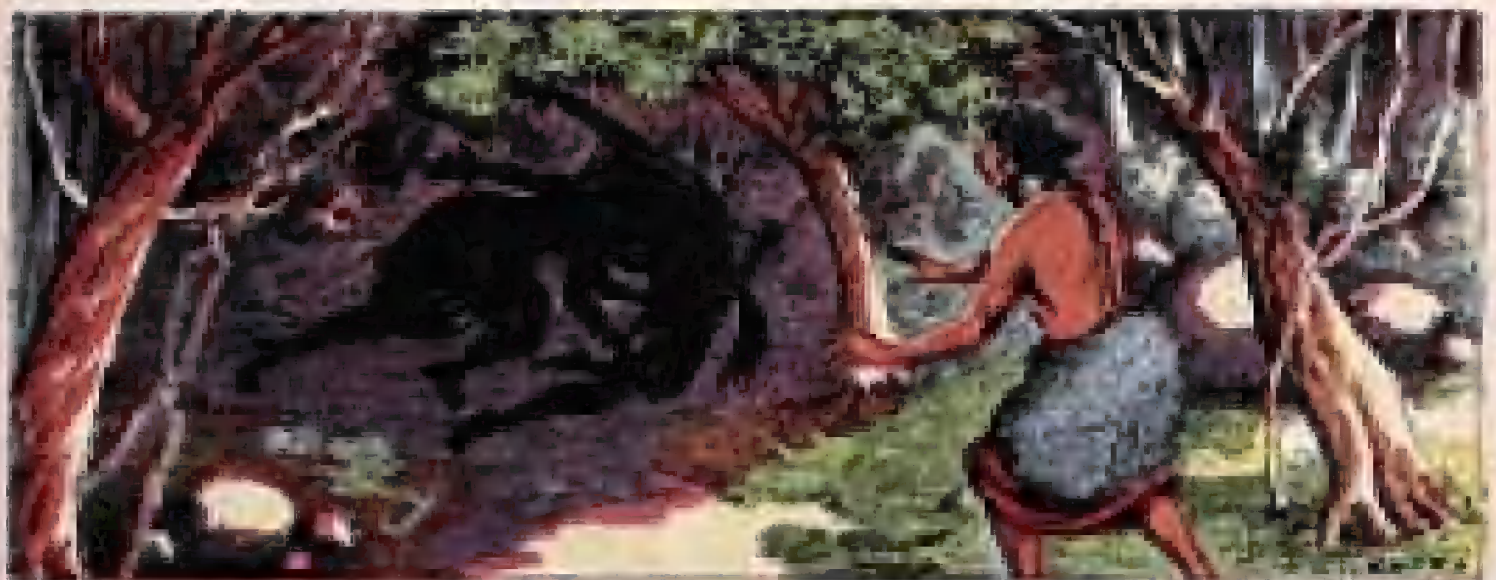
व्यर्थ श्रम

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतार कर हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल दिया। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम्हारा व्यर्थ श्रम देखकर मुझे महाराजा भीमसेन याद आ रहा है। तुम्हारी तरह उसने भी अपने सिर पर बहुत-सा श्रम ले लिया और अन्त में नहीं कर पाया। ताकि, तुम्हें तकलीफ़ न मालूम हो, मैं उसकी कथा सुनाता हूँ। सुनो।" यह यों कहानी सुनाने लगा।

प्राग्ज्योतिष नगर में धौम्यक नाम का एक बड़ा विद्वान रहा करता था। उसने समस्त शास्त्र पढ़ रखे थे। यदि वह चाहता, तो आसानी से राजा का पण्डित हो सकता था। पर उसने देखा कि कहीं भी राजधर्म ठीक नहीं था, इसलिए उसने स्वतन्त्रता से

बेताल कथाएँ

जीना चाहा, मन्त्र शास्त्र में उसने बहुत परिश्रम किया और बहुत-सी शक्तियाँ प्राप्त कर लीं। यही नहीं, हिमालय में जाकर वहाँ गुफाओं में योग का अभ्यास करके बहुत-सी सिद्धियाँ प्राप्त कीं। इसके बाद वह लोगों में अपनी अद्भुत शक्तियों का प्रदर्शन करता रहता।

उसकी ख्याति उस देश के राजा भीमसेन तक भी पहुँची। उसने पौन्ड्रक को बुलवाया। राजा की आज्ञा थी इसलिए पौन्ड्रक चला आया। भीमसेन महाराजा ने उसको एक कोठरी में कैद कर दिया और एक वर्ष तक उसको खाने-पीने के लिए भी कुछ न दिया। जब एक साल बाद उस कोठरी के दरवाज़े खोले गये, तो उसका मरना तो अलग, वह इतना स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट था मानों पौष्टिक पदार्थ खाता आ रहा हो। भीमसेन महाराजा स्पष्ट रूप से जान गया कि पौन्ड्रक बड़ा सिद्ध था। जो साल भर बिना खान-पान के जीवित रहे, वह किसी भी चीज़ के लिए समर्थ है। इसलिए भीमसेन महाराज ने जैसे भी हो, पौन्ड्रक का निर्मूलन करना चाहा।

पौन्ड्रक ने राजा से कहा—"अब मुझे जाने की अनुमति दीजिए।"

"क्यों, जाना क्यों चाहते हो?" भीमसेन महाराजा ने पूछा।

"क्योंकि यदि मैं यहीं रहा तो आप मेरे प्राण लेंगे।" पौन्ड्रक ने कहा।

"नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है। यदि जाना चाहो, तो चले जाना। भोजन करके जाओ।" राजा ने कहा।

पौन्ड्रक जब भोजन कर रहा था, तो उसने खीर का कटोरा पास खींचा। "मेरी इच्छा है कि हम दोनों इसका आधा आधा पियें।"

यदि एक ही कटोरे में से दो को पीना था, तो उन में से किसी एक को दूसरे का जूठा पीना पड़ता। भीमसेन को सन्देह हुआ, कहीं ऐसा न हो कि पौन्ड्रक मुझे जूठा पीने के लिए कहे। परन्तु पौन्ड्रक ने एक चाकू लेकर खीर को बीच में काटकर कहा—"आधा आप पीजिए।"

पौन्ड्रक की यह करामात देखकर भीमसेन महाराज चकित हुआ। फिर उसने खीर पीने में आगा पीछा दिखाया।

यह देख पौन्ड्रक ने कहा—"जाने दीजिये। यह भी मैं ही पिये लेता हूँ।" उसने कटोरा खाली कर दिया और उस कटोरे को ऊपर उछाल दिया। वह कटोरा छत तक गया, वहीं कुछ देर मँडराकर फिर नीचे गिर गया।

यह आश्चर्य देख भोजन करनेवाले बड़े स्तब्ध रह गये। जब कटोरा नीचे गिरा और लोगों ने पौन्ड्रक के लिए इधर उधर खोजा तो वह कहीं नहीं दिखाई दिया।

भीमसेन का निर्णय और पक्का हो गया कि कैसे भी हो, पौन्ड्रक को मरवाना है। उसने उसको पकड़कर लाने के लिए सैनिकों को भेजा।

सैनिकों ने जाकर उसको उसके घर में खोजा। यह देख पौन्ड्रक एक गौ बन गया और घर के सामने के गौओं के झुण्ड में मिल गया।

सैनिक अक्लमन्द थे। उन्होंने गौओं को गिना, जब उनमें उन्होंने एक गौ अधिक देखी, तो उन्होंने गौओं से कहा—"राजा केवल तुम से बात ही करना चाहते हैं। डरो मत। तुम अपने निज रूप में आ जाओ।"

तब एक गौ आगे बढ़ी और मनुष्य की आवाज़ में उसने पूछा—"क्या यह सच है?" यह जानकर कि गौ रूप

घोड़े से हाँककर राजा के पास ले गये। जब बोरा खोला गया तो उस में घास-फूस थी। वहाँ कुछ न था।

इतनी बार असफल रहा था, पर भीमसेन महाराजा ने उसको मारने का अपना निर्णय न बदला। उसने अपने सेनापति को बुलाकर आज्ञा दी—"तुम दस हज़ार सैनिकों को साथ ले जाओ और जैसे भी हो, उस पौन्ड्रक को मारकर आओ।"

सेनापति अपनी सेना के साथ देश में घूमने लगा। जब वह एक मैदान में खड़ा था, तो पौन्ड्रक सेनापति के डेरे के सामने आकर खड़ा हो गया। उसके एक हाथ में एक हण्डी थी और दूसरे में थैला था। उसने उनको नीचे रखकर कहा—"सेनापति! मैं पौन्ड्रक हूँ। तुम्हें और तुम्हारे सैनिकों को दावत देने के लिए यह शराब और यह भोजन लाया हूँ।"

सेनापति जान गया कि पौन्ड्रक अपनी मन्त्र शक्ति दिखाने आ रहा था। सेनापति ने उसकी शक्तियों के बारे में सुन ही रखा था, पर उन्हें स्वयं कभी देखा न था। इसलिए उसने पौन्ड्रक से कहा—"दावत दीजिए। पर हम दस हज़ार आदमी हैं।"

"कोई बात नहीं। एक एक को आने दीजिये।" पौन्ड्रक ने कहा। उस हंडी में से जितनी भी शराब ली, पर वह भरती ही जाती थी। उसी तरह थैला भी भोजन से भरता जाता था। सैनिकों ने खूब पेट भरकर खाया, उन्होंने वह हंडी और थैला हथियाने की सोची। पौन्ड्रक ने उनको मना नहीं किया। कई ने उनको लेना चाहा, पर वे भूमि से इस तरह चिपक गये कि वे हिले ही नहीं।

"इतनी महिमावाले व्यक्ति को भला मैं क्यों मारूँ?" यह सोचकर सेनापति ने पौन्ड्रक को जाने दिया।

इसके गुज़रने के कई दिन बाद, एक दिन शाम को जब भीमसेन महाराज अकेले थे, पौन्ड्रक प्रत्यक्ष हुआ—"महाराज आओ, उधर बाग में कुछ फूल खिल आये।"

"तुम चलते रहो। मैं पीछे घोड़े पर सवार होकर आता हूँ।" भीमसेन महाराज ने कहा। पौन्ड्रक इसके लिए मान गया और चल पड़ा। फिर राजा तलवार लेकर घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ा।

राजा जब कुछ दूर गया तो पौन्ड्रक सामने से आता हुआ दिखाई दिया। रास्ते में और कोई न था। जल्दी ही पौन्ड्रक के पास जाकर उसने उसको अपनी तलवार से मार देना चाहा। इसलिए उसने अपने घोड़े को और ज़ोर से दौड़ाया। पौन्ड्रक यद्यपि खड़ाऊँ पहिने जा रहा था, तो भी राजा का घोड़ा उसके पास न पहुँच सका। वह काफ़ी देर तक बहुत दूर दौड़ता रहा। फिर झाग उगलता गिर गया। राजा भी उसके साथ बेहोश हो गिर गया। कोई नहीं जानता था कि पौन्ड्रक कहाँ चला गया था।

बेताल ने यह कथा सुनाकर कहा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। भीमसेन

महाराजा पहिली बार ही जान गया होगा कि वह पौन्ड्रक की शक्तियों पर काबू नहीं पा सकता था। अगर कम अक्लवाला भी समझा जाये तो दूसरी बार तो उसे यह मालूम ही हो गया होगा। यह जानकर भी उसने क्यों पौन्ड्रक को सर्वथा नष्ट करना चाहा। जो बात उसका सेनापति जान गया था, क्या राजा नहीं जान सकता था! यदि जान गया था तो वह क्यों नहीं मान गया! यदि तुमने जान बूझकर इस प्रश्न का उत्तर न दिया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"एक बार भी अनुभव होने से पहिले ही राजा भीमसेन जानता था कि पौन्ड्रक की शक्तियाँ उसकी शक्तियों से कहीं अधिक थीं। इसलिए ही वह शुरु से ही पौन्ड्रक को मार देना चाहता था। उसके इस तरह करने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। कोई भी राजा यह नहीं चाहता कि उसके राज्य में उससे अधिक कोई शक्तिशाली हो। किसी भी राज्य में राजा के लिए सर्वशक्ति सम्पन्न होना आवश्यक है। इसलिए भीमसेन महाराजा का उसको मरवा देने का प्रयत्न बिल्कुल स्वाभाविक है। उसके प्रयत्न को व्यर्थ प्रयत्न भी नहीं कहा जा सकता। क्योंकि भले ही कोई कितना सिद्ध पुरुष हो, पर वह शाश्वत नहीं है। कभी न कभी उसको मरना ही होगा। उस मृत्यु को अपने अनुकूल करने के लिए भीमसेन ने प्रयत्न किया। इसमें भी कोई गलती नहीं है।

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

गुलाम लड़की

[५]

चोरों से बचकर जमरूद शाम अन्धेरा होने तक घोड़े पर सवार हो चलती रही। अगले दिन सवेरे फिर घोड़े पर सवार हुई और दिन भर चलती रही। इस तरह दस दिन रेगिस्तान में, सफ़र करने के बाद उसको ऐसी जगह मिली, जहाँ कुछ हरियाली थी। उसने जिस तरफ़ देखा, उस तरफ़ झरने, पेड़, फूल, पौधे आदि दिखाई दिये। पक्षियों का कलरव सुनाई दिया। जमरूद ने इस जगह कुछ आराम किया फिर घोड़े पर सवार हो सड़क पर चलते चलते एक महानगर में पहुँची। जब वह नगर के द्वार पर पहुँची तो वहाँ लोगों की भीड़ थी। उसको देखते ही उन्होंने हर्षध्वनि की।

इतने में नगर के द्वार खुले। नगर के प्रमुख, घोड़ों पर सवार होकर उसके सामने आये और उन्होंने झुककर प्रणाम किया, इसी समय लोगों ने जय जयकार किया। "सुलतान की जय, सुलतान की जय।"

जमरूद को, जो पुरुष वेश में था, यह सब समझ में नहीं आया। उसने नगर के प्रमुखों की ओर मुड़कर कहा—"आपके नगर में यह भीड़ क्यों है? आपको मुझ से क्या काम है?"

"आपको हमारे नगर पर शासन करने के लिए अल्लाह ने हमारे पास भेजा है। वह सर्वज्ञ है। इसलिए ही आप जैसे युवक को उन्होंने हमारा राजा बनाकर भेजा है।" उन्होंने कहा।

को घसीटा जाता है। तब अकेले ही खा रहे हो, कहीं पेट में दर्द न हो जाये।" उन लोगों ने तरह तरह की बातें कहीं।

पर बर्सूम ने फिर मुट्ठी भर हलवा लिया। उसे वह मुँह में रखनेवाला था कि जमशद ने उसे पहिचान लिया। उसने सैनिकों को आज्ञा दी। "यह जो हलवा खा रहा है, उसको पकड़कर लाओ।" सैनिक जाकर बर्सूम को घसीटकर ले गये।

इस घटना के बारे में जानकर सब को आश्चर्य हुआ। खाना छोड़कर वे देखने लगे कि क्या हो रहा था।

जमशद ने बर्सूम की ओर इस तरह देखा, जैसे अंगारे बरसा रही हों। उसने पूछा—"क्या है! कौन हो तुम! तुम हमारे नगर में क्यों आये हो!"

"महाराज! मेरा नाम मकि है। मैं [illegible] का काम करता हूँ। व्यापार के लिए आपके नगर में आया हूँ।"

जमशद ने अपने नौकरों से अच्छी रेत की थैली और तांबे की सलाई मंगवाई। उसने रेत में कुछ यूं ही लकीरें खींची। आखिर बर्सूम की ओर मुड़कर पूछा—"तुम मेरे सामने झूठ बोलते हो!

बदमाश। तेरा असली नाम है मर्दूस। तुम क्या एक सुल्तान लड़की को नहीं उड़ा ले गये थे! तुम उसे ढूंढते ढूंढते इस नगर में आये हो न!"

मर्दूस कांपता कांपता, उसके पैरों पर पड़ा। वह मान गया कि जो कुछ उसने कहा था वह सच था। यह देख लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। सब कहने लगे—"हमारे हुजूर से कोई बड़ा ज्योतिषी होगा इस संसार में!"

अमरूद ने अपने सैनिकों को बुलाकर कहा—"इस नीच की बोटी बोटी काट दो।" लोगों ने कहा कि जो कुछ सज़ा उसने दी थी, वह ठीक थी।

मर्दूस के पास जो बैठे थे, उन्होंने कसम खाई कि ज़िन्दगी में कभी हलवा और मिठाई नहीं खायेंगे। उनके ख्याल में मर्दूस की मौत उन्हीं के कारण हुई थी।

इसलिए अगले महीने फिर जब दावत हुई, तो कोई हलवा और मिठाई के थालों के पास नहीं गया। उनकी तरफ किसी ने देखा भी नहीं। सब ने यह देख कि सुल्तान की नज़रें उन पर थीं, वही खाया, जो उनके पास रखा गया था। जब ज्योतिष
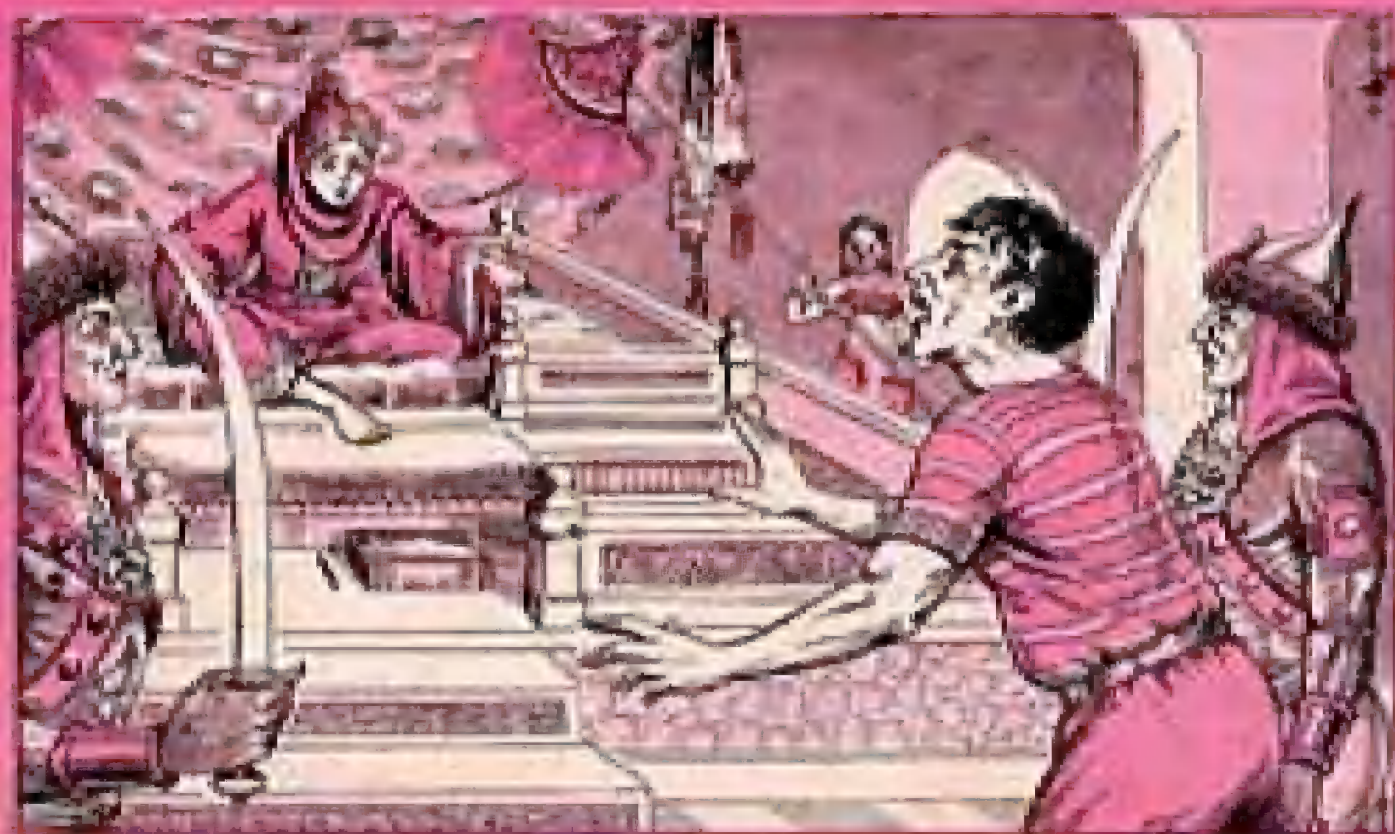
चख रहा था, तो एक गँवार वहाँ आया। जब उसने खाली जगह के लिए इधर उधर खोजा, तो वहाँ जगह खाली मिली, जहाँ हलवा और मलाई के थाल थे। वह वहाँ बैठ गया और उसने वे थाल अपनी तरफ खींच लिये।

गँवार जो आया था, वह जगन नाम का चोर था। कमरुद चूँकि उसकी माँ की आँखों में धूल झोंककर आई थी इसलिए उसको खोजता खोजता उस शहर में आया था और सहभोज में हाज़िर हुआ था। उसको देखते ही कमरुद उसको पहचान गई और उसको पकड़ लाने के लिए अपने सैनिकों को भेजा। जगन मुट्ठी भर हलवा लेकर निगल गया। वह दूसरी मुट्ठी ले रहा था कि सैनिकों ने उसको पकड़ लिया। उसके हाथ पैर बाँधकर वे उसको सुल्तान के पास ले गये।

"तुम कौन हो! क्या कर रहे हो! क्यों इस शहर में आये हो!" कमरुद ने उससे पूछा।

"मेरा नाम उस्मान है, मैं यात्री हूँ। काम के लिए इस नगर में आया हूँ।" जगन ने कहा। कमरुद ने पहिले की तरह रेत की पेटी और ताम्बे की सलाई मँगवाई। रेत पर कुछ लकीर खींची और इस तरह देखने लगी जैसे उसकी परीक्षा कर रही हो। आखिर उसने उससे कहा—"अरे बदमाश! तेरा नाम जगन है। तूने चोरियाँ की हैं। कत्ल किये हैं। सच बताओ। नहीं तो तुम्हें पिटवा पिटवा कर मरवा दूँगा।"

जगन को यह सन्देह न हुआ जो उससे बात कर रही थी, वह वही लड़की थी, जिसे वह उठा ले गया था। वह डर गया। डर से काँपते हुए उसने

रशीद को गिरा दिया। दाढ़ी पकड़कर खींची। उसे पकड़कर उन्होंने कमरुद के सामने पेश किया।

"तुम्हारा नाम क्या है? क्या पेशा है तुम्हारा? यहाँ किस काम पर आये हो?" रशीद से उन्होंने पूछा।

"हुजूर, मेरा नाम मस्तून है। गरीबी के सिवाय मेरा और कोई पेशा नहीं है। मैं फकीर हूँ।" रशीद ने कहा।

कमरुद ने रेत मँगवाई, उस पर लकीरें खींची और उनको इस तरह देखने लगी जैसे उनका अध्ययन कर रही हो, फिर रशीद की ओर मुड़कर कहा—"मुझे लगता है, तुम सुल्तान के सामने ही झूठ बोल रहे हो। तुम्हारा असली नाम रशीद अल्दीन है। मुसलमान स्त्रियों के साथ बलात्कार करना तुम्हारा पेशा है, सच मान जाओ।"

यह जानकर कि यहाँ तो जान न बचेगी, रशीद सच मान गया। परन्तु कमरुद ने उसको भी मौत की सजा दी।

दावत खतम हुई। लोगों ने अपने सुल्तान की खूब प्रशंसा की। उसकी योग्यता की वाह वाह की।

दावत के बाद कमरुद अपने महल में चली गई। शत्रुओं से बदला ले लिया था, लेकिन उसका मन हल्का तो हुआ पर उसे खुशी न हुई। जब तक अलीशार उसे न मिलेगा, उसको आनन्द नहीं मिलेगा।

"मेरी इच्छा पूरी करने की जिम्मेवारी सर्वशक्तिमान खुदा पर ही है।" सोचकर, वह रात भर आँसू बहाती रही। वह सारा महीना अपने निजी कमरे में ही रही। उसने किसी को अपना मुँह न दिखाया।

[अगले अंक में समाप्त]

नौकर का तबादला

ज़मीन्दार ने अपने दामाद के लिए एक नौकर तो रख दिया था, पर उसको काम कुछ न था। वह मुंडी बन्दर-सा नटखट था। फिर काम न था। इसलिए, गोल मटोल भीम का नौकर, दिन रात दीवारों पर, कुर्सियों पर, जहाँ देखो वहीं कूदता फाँदता रहता।

भीम को भी, अपने नौकर को हमेशा कूदते फाँदते देख खुशी होती। पर ज़मीन्दार यह देख खीझ उठता। जब दामाद आस पास न होता, तो वह कहता—"क्यों हमेशा यों उछलते कूदते रहते हो!" पर वह लड़का, इस डाँट डपट की परवाह न करता।

एक बार ज़मीन्दार ने स्वयं अपनी आँखों देखा कि वह लड़का, भीम के सामने उछल कूद रहा था। भीम ने उसको यह करते देखा भी, पर उसने कुछ न कहा। उसने लड़के को दूर भेज कर भीम से कहा—"यदि तुम इस लड़के को यूँही देखते रहे, तो वह किसी दिन तुम्हारे सिर पर बैठेगा। होशियार रहना।"

यह सुनते ही भीम दुःखी रहने लगा। "ससुर जी की बात ठीक ही होगी। शायद सिर पर बैठने के लिए ही यह शरारती लड़का, उछलने कूदने का अभ्यास कर रहा है। कुछ भी हो, इसे सिर पर नहीं चढ़ने दूँगा।" यह सोच भीम ने एक उपाय ढूँढ निकाला। जब कभी नौकर को बुलाने की ज़रूरत होती तो वह सिर पर बड़ी-सी पगड़ी बाँध लेता। फिर नौकर को बुलाता। उसे जो कुछ कहना होता,

रहता। उसके जाने के बाद, अपने सिर पर से पगड़ी और हाथ उतार देता। फिर भी उसे भय रहता कि कहीं उछल कर वह सिर पर न चढ़ बैठे। इसलिए भीम एक जगह न बैठता। इधर उधर घूमता रहता।

एक दिन महालक्ष्मी ने देखा कि भीम सिर पर पगड़ी बाँध कर उस पर अपने हाथ रख, इधर उधर चहल कदमी कर रहा था। उसने अपने पति से पूछा—"यह पगड़ी किस लिये?"

नौकर को भेजकर भीम ने अपनी पत्नी से कहा—"तुम क्या जानो! देखते देखते वह लड़का मेरे सिर पर चढ़ बैठेगा। तुम्हारे पिताजी ने ही मुझे यह बताया है। क्योंकि वे अनुभवी हैं, इसलिए वे ताड़ गये हैं। जो कुछ उन्होंने कहा है, वह बिल्कुल ठीक है। क्योंकि मेरे सिर पर चढ़ने के लिए वह इधर उधर चीज़ों पर कूद फाँदकर चढ़ने का अभ्यास कर रहा है। मैं भी सावधान हूँ।"

महालक्ष्मी ने हँसकर कहा—"पिता जी का मतलब यह न था। यदि लड़के को छूट दी गई, तो वह तुम्हारी बात नहीं सुनेगा। इसका मतलब यह नहीं कि वह सचमुच तुम्हारे सिर पर चढ़ बैठेगा।"

भीम को ऐसा लगा जैसे कोई बड़ा-सा बोझ उसके सिर पर से उतार दिया गया हो। ऐसी हालत कभी न आई थी कि जब वह कोई हुक्म दे और लड़का न सुने। महालक्ष्मी ने निश्चयपूर्वक कह दिया था कि वह उसके सिर पर नहीं चढ़ेगा। इसलिए भीम उस लड़के के साथ जैसे पहिले रहता था वैसे ही रहने लगा।

एक दिन भीम ने लड़के को बुलाकर कुछ पानी लाने के लिए कहा। लड़का एक छोटे लोटे में पानी ले आया।

तो राजा ही हटा सकता था। इसलिए वह राजा को देखने निकला।

बड़ों को देखने के लिए कोई खाली हाथ तो नहीं जाता। इसलिए वह गरीब एक मुरगी लेकर राजा को देखने निकला। गरीब ने अपनी मुर्गी राजा के सामने रखकर, जिस काम पर वह आया था, उसके बारे में अर्ज किया।

राजा ने सब सुनकर हँसते हुए कहा—"तुम एक मुरगी ले आये, पर हम तो छः हैं, मैं, मेरी पत्नी, दो लड़के, दो लड़कियाँ कैसे एक मुरगी इन सब के लिए काफ़ी रहेगी?"

किसान गरीब भले ही हो पर था अक्लमन्द। "यह भी कोई बड़ी बात है, महाराज! मुझे एक चाकू दीजिये, मैं इस तरह काटकर आपको बताऊँगा कि कैसे इसे छः में बाँटा जा सकता है।"

राजा ने भी देखना चाहा कि किसान कैसे मुरगी को छः में बाँटता है। उसने एक चाकू मँगवाकर दिया।

किसान ने मुरगी का सिर काटकर राजा के सामने रखा। "आप राज्य के लिए सिर की तरह हैं, इसलिए मुरगी का सिर आपके लिए।" इसके बाद उसने

मुरगी की पीठ काटकर कहा—"यह पत्नी के लिए। क्योंकि घर गृहस्थी का भार उसकी पीठ पर ही है। फिर उसने मुरगी के दोनों पैर काटकर कहा—"ये दोनों आपके लड़कों के लिए हैं। क्योंकि उनको आपके पद चिन्हों पर चलना है।" फिर उसने मुरगी के पंख काटकर कहा—"ये लड़कियों के लिए हैं। क्योंकि किसी न किसी दिन यहाँ से उड़ जाना है और जो बाकी मुरगी रह गई है, वह मेरी है। क्योंकि मैं आज आपका अतिथि हूँ।"

किसान की बुद्धिमत्ता देखकर राजा ने उसको बहुत-सा धन देकर घर भेज दिया। यह बात सारे शहर में फैल गई। वहीं एक लालची भी था। उसने सोचा कि वह भी वैसा ही काम करके राजा के पास ईनाम पायेगा।

तुरत उस लालची ने क्या किया! एक मुरगी नहीं, पाँच मुरगियों को एक टोकरी में डालकर राजा के दर्शन करने गया। राजा को उसने उन्हें भेंट में दे दिये।

उसे देखते ही राजा उसका लालच ताड़ गया। उसने हँसते हुए कहा—

"अरे भाई, हम तो छः हैं, कैसे पाँच मुरगियों को आपस में बाँटेंगे? बिना काटे उनको कैसे बाँटेंगे, भला बताओ।"

"अरे अरे, यदि एक और मुरगी ले आता, तो अच्छा होता।" लालची ने मन में सोचा, तो, पर वह यह न जान पाया कि कैसे मुरगियों को बाँटा जावे।

तब राजा ने लालची से कहा—"तुम नहीं बाँट सकते, यह काम वह किसान ही कर सकता है। देखें, वह कैसे बाँटता है।" कहकर उसने किसान के पास खबर भिजवाई।

किसान आया। वह जानता था कि समस्या क्या थी। उसने राजा से यों कहा—"इन पाँचों मुरगियों को कैसे बाँटा जावे, मैं बताता हूँ। आपके लिए और रानी के लिए एक मुर्गी, आप दोनों और मुर्गी मिलाकर तीन हो जाते हैं। आपके दोनों लड़कों के लिए एक मुरगी। इस तरह वे दोनों, और मुरगी मिलाकर तीन हो जाते हैं। इस तरह लड़कियों को मिलाकर एक, वे दोनों और वह मिलाकर तीन हो जाते हैं। अब बची दो मुरगियाँ, वे दोनों और मैं मिलाकर तीन हो जाते हैं। इसलिए वे मेरी हो जायेंगी। हिसाब बराबर।"

इस तरह का बँटवारा देख कर लालची दंग रह गया। राजा खूब जोर से हँसा। लालची के सामने ही उसने किसान को दो मुरगियाँ तो दी ही, बहुत-सा धन भी देकर, घर भेज दिया।

"इसलिए लोग कहते हैं—"क्या अक्ल किसी एक की मिल्कियत है?" बाबा ने कहा। सिवाय छोटे के सब खूब हँसे।

भूख का भूत

एक दिन रात को जब कन्नपुर का राजा, खूब ओढ़कर सो रहा था, तो एक भूत उसके मुख के अन्दर घुस गया। जब अगले दिन वह उठा, तो उसे जबर्दस्त भूख लग रही थी। जब उसको रोज़ का भोजन परोसा गया, तो उसके एक कौर में भी न आया। खाना बनानेवाले घबराये। वे तरह तरह के पकवान बनाने लगे। गरमा-गरम पकवान ज्यों-ज्यों उसके सामने रखे जाते गये, त्यों-त्यों वह उनको निगलने लगा। जो खाना बीस आदमियों के लिए काफ़ी होता था, वह राजा अकेला स्वयं निगल गया, तब जाकर उसकी भूख मिटी। यह तो प्रातःराश की बात हुई। दुपहर के भोजन के बारे में तो कहना ही क्या। रसोइये चार भेड़, दर्जन मुरगियाँ, मन भर शाक-सब्ज़ी, ढेर-सा चावल बनाकर तैयार थे। राजा ने अकेले ही वह सब खा लिया।

जब वैद्यों ने आकर राजा की परीक्षा की, तो उन्होंने बताया कि उसको कोई बीमारी न थी। वह देखने में भी पहिले की तरह ही था। उसके लिए आवश्यक भोजन इकट्ठा करने के लिए सैनिक गाँवों पर हमला बोलने लगे। जल्दी ही सारे देश में तहलका मच गया।

भूख का भूत राजा के लिए भी एक समस्या बन गया। जब उसे मालूम हुआ कि उसके सैनिक भी उसके लिए आवश्यक भोजन एकत्रित नहीं कर पा रहे थे, तो उसने अपने सामन्तों पर दबाव डालना शुरु किया। वह एक एक सामन्त के यहाँ

"महाराज, वहाँ आपको एक आश्चर्य जनक बात बतानी है। मैंने यह बात एक सिद्धपुरुष से जानी है। हिमालय पर्वतों में एक घाटी है। उस घाटी में एक बड़ा महल है। वह मामूली महल नहीं है। उसकी दीवारें पनीर से बनी हैं। उसके द्वार पर जलेबी और बड़ों के तोरण हैं। उस महल के चबूतरे हलवों के हैं। उसकी छत रोटियों की है। हरेक कमरे में एक झरना है। एक झरने में गरमागरम खीर है। एक में मलाई, एक में अंगूर का रस और एक में नारियल का पानी। इनके चारों ओर तरह तरह के मणि हैं।" इस प्रकार वर्णन करते समय सभापति, सामने रखी तश्तरियों को कभी राजा के नाक के सामने रखता तो कभी उसके मुख के पास रखता और फिर हाथ पीछे कर लेता।

इस तरह कुछ देर करने के बाद राजा के मुख का भूत वह सब न सह सका। वह सभापति के हाथ के पकवानों को पकड़ने के लिए बाहर कूद पड़ा। तुरत सभापति ने उसको पकड़ लिया और उसको ले जाकर रसोई घर की बड़ी भट्टी में डाल दिया।

जब भूत उसके मुख से निकल गया, तब राजा बेहोश हो गया। वह अगले दिन सवेरे आराम से उठा। उसको पहिले की तरह भूख न थी। जैसे और जितना औरों ने खाया, उसने भी खाया।

यह देख कि सभापति ने उसकी बीमारी ठीक की थी, राजा बड़ा सन्तुष्ट हुआ और उसने सभापति को बहुत से उपहार दिये। उसको लेकर सभापति अपने देश चला गया। वहाँ जाकर विवाह करके वह आराम से रहने लगा।

खाने लगा। सभापति कुछ दूरी पर बैठकर मुख में एक सूखा तिनका चबाने लगा।

राजा ने यह देखकर पूछा—"क्या तुम पागल हो? पशु की तरह क्यों यों सूखा तिनका खा रहे हो?"

"पागल नहीं, यह देख कि आपकी राज पंक्ति में खाने के लिए कोई नहीं है, इसलिए ऐसा कर रहा हूँ।" सभापति ने कहा।

राजा को यह बात चुभी। उसने अपने सामने के फलों में से एक फल सभापति को दिया। सभापति ने उस फल को छीलते हुए कहा—"मैं कुछ कहना चाहता हूँ, अगर आप अनुमति दें, तो कहूँ?"

"क्या है वह?" राजा ने पूछा।

"रात का भोजन करने से पहिले आप थोड़ी देर जरा सो जाइये।" सभापति ने कहा।

"मैं भी ऊँघने की सोच रहा था। तुम्हारी इच्छा पूरी करना कोई बड़ी बात नहीं है।" राजा ने कहा।

यूँ तो सफर की थकान थी, फिर पेट भी भरा था, इसलिए राजा एक कमरे में सो गया। जब वह सो रहा था, तो

सभापति ने सामन्त के नौकरों से, उसके हाथ पैर बँधवा दिये। जब नौकर ये काम कर रहे थे, तब सामन्त वहाँ से खिसक गया। जब दो-तीन घड़ी बाद राजा उठा, तो उसने देखा कि उसके हाथ पैर बँधे हुए थे। भूख से उसकी बुरी हालत थी।

यह मालूम होते ही कि राजा सोकर उठ गया था, सभापति रसोइयों से तरह तरह के पकवान बनवाकर, छोटी-छोटी तश्तरियों में रखवाकर बैठा था। उनको देखकर, उनकी सुगन्ध सूँघकर, राजा की भूख और भी बढ़ती जाती थी।

"महाराज, यहाँ आपको एक आश्चर्य जनक बात बतानी है। मैंने यह बात एक सिद्धपुरुष से जानी है। हिमालय पर्वतों में एक घाटी है। उस घाटी में एक बड़ा महल है। वह मामूली महल नहीं है। उसकी दीवारें पनीर से बनी हैं। उसके छत पर जलेबी और बड़ों के तोरण हैं। उस महल के चबूतरे हलवों के हैं। उसकी छत रोटियों की है। हरेक कमरे में एक झरना है। एक झरने में गरमागरम खीर है। एक में मलाई, एक में अंगूर का रस और एक में नारियल का पानी। इनके चारों ओर तरह तरह के बाग हैं।" इस प्रकार वर्णन करते समय सभापति, सामने रखी तश्तरियों को कभी राजा के नाक के सामने रखता तो कभी उसके मुख के पास रखता और फिर हाथ पीछे कर लेता।

इस तरह कुछ देर करने के बाद राजा के मुख का भूत यह सब न सह सका। वह सभापति के हाथ के पकवानों को पकड़ने के लिए बाहर कूद पड़ा। तुरंत सभापति ने उसको पकड़ लिया और उसको ले जाकर रसोई पर की बड़ी भट्टी में डाल दिया।

जब भूत उसके मुख से निकल गया, तब राजा बेहोश हो गया। वह अगले दिन सवेरे आराम से उठा। उसको पहिले की तरह भूख न थी। जैसे और जितना औरों ने खाया, उसने भी खाया।

यह देख कि सभापति ने उसकी बीमार ठीक की थी, राजा बड़ा सन्तुष्ट हुआ और उसने सभापति को बहुत से उपहार दिये। उनको लेकर सभापति अपने देश चला गया। वहाँ जाकर विवाह करके वह आराम से रहने लगा।

बुढ़िया की सूझ

किसी गाँव में सीताराम नाम का एक पंडित रहा करता था। गाँव के बच्चों को पढ़ाकर गुरुदक्षिणा में जो कुछ मिला था उसे बचाकर, उसने पाँच सौ रुपये जमा कर लिए थे।

इतने में काशी में विद्वानों की एक सभा हुई। सीताराम के पास भी निमन्त्रण आया। उसके लिए अब ये समस्या थी कि किसके पास अपने पाँच सौ रुपये रखवाये। जब उसने घर में रखना चाहा, तो पत्नी ने मना किया। "धन भयंकर चीज़ है। मैं उसकी रखवाली नहीं कर सकती। चोर मेरे प्राण भी ले लेंगे।"

यह सोचता कि कहाँ रुपया रखा जाये। सीताराम कौड़ीमल की दुकान पर गया। उसने अपनी समस्या के बारे में कौड़ीमल से कहकर पूछा—"तुम्हारी क्या सलाह है? किसके पास यह पैसा रखा जाये?"

"अरे भाई, पैसे के बारे में किसी का विश्वास न करो।" कौड़ीमल ने कहा।

वे दोनों जब बातें कर रहे थे तो दुकान के गुमाश्ता ने एक स्त्री को घी तोलकर दिया और उससे पैसे लेकर उसे भेज दिया।

कौड़ीमल ने इस बारे में विवरण मालूम करके कहा—"अरे दुष्ट कहीं का, तुमने उस स्त्री से चार दमड़ी अधिक ले लिए हैं। हमें ईमानदारी से एक दमड़ी मिलती थी, पर अब मिली हैं पाँच दमड़ियाँ। तुमसे कितनी बार कहा, पर तुम बाज नहीं आते। याद रखो, जब वह अगली बार आये, तो उसे चार दमड़ी वापिस दे देना।"

देर सोचकर कहा—"मैं तेरा सारा पैसा कौशिक से दिलवा दूँगी। जो मैं कहूँ करो।" उसने उसे एक उपाय बताया। सीताराम भी जैसे उसने कहा था, वैसा करने के लिए मान गया।

इस घटना के कुछ दिन बाद कमला दो हजार रुपये के गहने लेकर कौशिक के पास आयी। उसने कौशिक से कहा—"देखो भाई, मेरा लड़का दस साल पहिले शिक्षा के लिए काशी गया था। अब तक उसका कहीं पता नहीं है। मैं अब बड़ी हो गई हूँ। नहीं मालूम कब मर जाऊँगी। इसलिए मैं काशी जाकर अपने लड़के का पता लगाना चाहती हूँ। मैं अकेली हूँ। मेरे पास दो हजार रुपयों के ये गहने हैं। यदि इन्हें साथ ले गई, तो चोर चुरा लेंगे। तुम भले हो, सीताराम भी काशी जाते समय तुम्हारे पास रुपये रखा गया था। दूसरों का रुपया, सुना है, तुम मिट्टी के समान देखते हो। इसलिए ये भी तुम रख लो, जब तक मैं वापिस न आ जाऊँ।"

कौशिक बड़ा खुश हुआ कि उसके भाग खिल उठे थे। उसने सोचा कि

बुढ़िया यह भी जानती थी कि सीताराम वापिस आ गया था। उसने उस बुढ़िया से कहा—"आप ही जहाँ चाहें, अपने हाथों से ही खोदकर गाड़ दीजिये।"

इतने में सीताराम वहाँ आया। उसने कहा—"अरे भाई कोतीमल, मैं भूल गया कि मैंने अपना धन कहाँ गाड़ा था। अब जगह याद आयी है। वहीं जाकर खोदता हूँ।"

कोतीमल घबराया। यदि बुढ़िया को मालूम हुआ कि वह सीताराम के पाँच सौ रुपये निगल गया था, तो वह अपने दो हजार रुपये नहीं रखवायेगी। यह सोच कोतीमल ने कहा—"आपको जो सन्देह हुआ था, वह मुझे भी हुआ। मैंने वहीं खोदा, जहाँ आपकी थैली जैसी थी, वैसी मिली।" कहता वह अन्दर गया और अन्दर से सीताराम की थैली ले आया।

यह देखकर बुढ़िया सीताराम की ओर देखकर बोली—"कौन! सीताराम ही है न! काशी से कब आये भाई! देखो, क्या वहाँ हमारा लड़का दिखाई दिया था?"

सीताराम ने उससे कहा—"अभी ही आया हूँ। काशी में तुम्हारा लड़का दिखाई दिया था। उसने कहा था कि दो दिन मेरे जाने के बाद वह भी आयेगा। उसने कहा था कि तुम फिक्र न करो।"

"अरे भला हो भाई तुम्हारा, तो अब मेरे काशी जाने की जरूरत नहीं है।" कहती बुढ़िया सीताराम के साथ चल पड़ी।

यह देख कोतीमल अचरज में पड़ गया।

खर, दूषण, त्रिशिर आदि राक्षस वीर अपनी चौदह हजार सैनिकोंवाली सेना के साथ राम के पराक्रम के सामने पराजित होकर, मर मरा गये, तो अकम्पन नाम का रावण का एक दूत जैसे तैसे जान बचाकर रावण के पास गया। उसने उसके दर्शन करके कहा :—

"राक्षसेश्वर! जनस्थान में जो हमारे राक्षस थे, वे सब के सब युद्ध में मार दिये गये हैं। मैं जैसे तैसे जिन्दा भाग आया हूँ और आपको यह खबर देने आया हूँ।" अभी अकम्पन कह ही रहा था, कि रावण अंगारा होने लगा। उसने गरजकर कहा—"किसका समय आ गया है? मैं अग्नि को ही दग्ध कर दूँगा। मृत्यु को ही मार सकता हूँ। सूर्य और चन्द्र भी मेरे क्रुद्ध होने पर भस्म हो सकते हैं।"

यह अट्टहास देख अकम्पन ने रावण से अभय प्राप्त करके, जनस्थान में राक्षस किस तरह मारे गये थे, उसके बारे में पूरे विवरण दिये।

रावण ने यह सुनकर फुंकारते हुए कहा—"शायद इस राम की सब देवता मदद करने आये थे?"

"नहीं, नहीं, राम पराक्रम में इन्द्र से कम नहीं है। अग्नि का जिस प्रकार

सुन्दर है। यदि ऐसी किसी की पत्नी हो, तो अलग स्वर्ग की जरूरत ही क्या है। मैंने जब इस सीता को लाकर तुम्हारी पत्नी बनाने की कोशिश की तो लक्ष्मण ने मेरी यह हालत कर दी। मेरे कान और नाक काट दिये। उन राम को मारकर अपने बन्धुओं का बदला लो। सीता को अपनी पत्नी बनाओ।" सूर्पनखा ने रावण को उकसाया।

रावण ने दरबार विसर्जित कर दिया और सीता के अपहरण के बारे में विस्तार पूर्वक सोचने लगा। उसे लगा कि सीता को लड़ झगड़ कर लाने की अपेक्षा चोरी चोरी उठा ले आना ही अच्छा था। क्योंकि उस व्यक्ति को, जिसने इतने राक्षसों को मार दिया था, हराकर सीता को उठा ले आना मामूली बात न थी। परन्तु रावण ने ये बात न मन्दोदरी से कही, न अपने मन्त्रियों से ही। उसे डर था कि कहीं वे उसका विरोध न करें।

रावण ने अपने सारथी को रथ तैयार करने के लिए कहा। उस पर सवार होकर मारीच के आश्रम में पहुँचा। मारीच ने उसका अतिथि सत्कार किया। "इतने में फिर क्यों चले आये! क्या कारण है? लंका में सब कुशल तो है?"

"राम को क्षमा नहीं किया जा सकता। वह दुष्ट है। क्रूर है। मूर्ख है। लोभी है। उसने राक्षसों का तो संहार किया ही, मेरी बहिन सूर्पनखा के नाक और कान भी काट दिये। मैं सीता का अपहरण करना चाहता हूँ। इसमें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। तुम पराक्रमी हो। बुद्धिमान हो। तुम माया आदि करना भी जानते हो। तुम सोने के ऐसे मृग बन जाओ,

रावण ने वे बातें नहीं सुनीं। उसने मारीच से कहा—"चाहे, सब देवता आकर मुझ से कहें, पर मेरा निश्चय नहीं बदलेगा। मेरा निर्णय ठीक है या गलत है, मैं तुम से नहीं पूछ रहा हूँ। जब मैं तुमसे एक काम करने के लिए कहता हूँ, तो तुम्हें करना ही चाहिये। जैसा मैं कह रहा हूँ, वैसे तुम सोने के हिरन का रूप धरो और सीता को आकर्षित करो। उसके बाद तुम अपने रास्ते चले जाओ। यदि तुम्हें पकड़ने के लिए राम अकेला आवे, तो तुम उसकी आवाज़ में चिल्लाओ—"सीता, लक्ष्मण" तब लक्ष्मण भी आयेगा। यदि तुमने मेरा उपकार किया, तो मैं तुम्हें आधा राज्य दे दूँगा। यदि तुमने मना किया, तो अभी तुम्हारे प्राण निकाल दूँगा। राम का तुम्हें मारना झूठ है, पर मेरा मारना सच है।"

मारीच यह सुनकर बोला—"तुम मुझे मारने के लिए कहते हो, पर क्यों नहीं उसे मारते जिसने तुम्हें यह सलाह दी? जब तुम इस प्रकार के ऊटपटांग काम कर रहे हो, तो तुम्हारे मन्त्रियों ने क्यों न रोका? यदि मुझे मरना ही है, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। पर मेरे बाद तुम, राक्षस वंश, लंका नगर, सब नष्ट होकर रहेगा। यह भयंकर घटना होगी।" यह कहकर मारीच ने रावण को साथ चलने के लिए कहा।

भले ही उसने ऐसी बातें कहीं हों, जो उसको नहीं कहनी चाहिए थी, पर क्योंकि अन्त में वह उसकी बात मान गया था, इसलिए रावण ने मारीच का आलिंगन किया। विमान जैसे रथ में उसको बिठाकर राम के आश्रम में गया। वह आश्रम केलों के पेड़ों के बीच में था।

तुरत मारीच ने आकर्षक असाधारण मृग का रूप धारण किया। चरता चरता वह राम के आश्रम के पास गया। इस विचित्र मृग के शरीर का रंग सोने का था। उस पर चान्दी के दाग थे। पेट सफ़ेद, खुर काले रंग के थे। पूँछ नीले रंग की थी। सींगों के आखिरी भाग नीले रंग में थे। मुख भी चुनहला था, बहुत ही सुन्दर था। वह कभी चरता तो कभी घास पर लेटता, जब और हरिण पास आते, तो दूर हट जाता। वह उसी प्रकार बहुत देर तक घूमता रहा।

आखिर सीता फूल तोड़ने के लिए बाहर पेड़ों के पास आई और उसने उस हरिण को देख ही लिया। वह उसे देखकर बड़ी चकित हुई और उसने राम और लक्ष्मण को पुकारा। उसके पास आते हुए उन्होंने भी उस विचित्र हरिण को देखा। देखते ही लक्ष्मण ने राम से कहा—"इस हरिण को देखकर तो लगता है कि इसने वेष बदलकर, उन राजाओं को खा डाला था, जो शिकार के लिए आते थे। कितने ही मुनियों को खा डाला इसने। इस तरह का हरिण कहीं नहीं होता।"

सीता ने लक्ष्मण को चुप रहने के लिए कहा और राम से कहा—"वह हरिण मुझे चाहिए। ले आओ। हम उससे खेलेंगे कूदेंगे। उसका सौन्दर्य क्या सौन्दर्य है! यदि इसे जीवित पकड़ सकें, तो हम इसको अयोध्या ले जायेंगे। भरत और सासें इसे देखकर बड़ी खुश होंगी। यदि जीवित न मिल सके, तो कम से कम हम मारकर ही ले जायेंगे। मैं इसके चमड़े को सुरक्षित रखूँगी।" सीता ने कहा।

संसार के आश्चर्य :

१२. "क्रेटर" झील

आज के अमेरिका के ओरेगान प्रान्त में कभी १२,००० फीट ऊंचा एक ज्वालामुखी हुआ करता था। उसकी चोटी पर हमेशा बर्फ रहती। करीब ६,५५० वर्ष पूर्व वह ज्वालामुखी फूटा और उसकी एक मील की ऊंचाई (पाँच हजार फीट के करीब) जाती रही।

इसके फलस्वरूप बचे हुए पर्वत में एक बड़ा-सा गड्ढा बन गया। इस गड्ढे की गहराई ४०० फीट है और परिधि छः मील। होते होते इसमें पानी भर गया। पानी से गड्ढा आधा ही भर सका। न पानी बढ़ा, न घटा ही। साल भर में इसमें जितना पानी कम होता है उतना ही फिर आ भी जाता है।

यह ही प्रसिद्ध "क्रेटर" झील है। "क्रेटर" का अर्थ ज्वालामुखी का मुख होता है।

१८५३, जून १२ को जान वेस्ली हिल्समैन ने इस झील को पहिली बार देखा। अब इस झील के चारों ओर २५० वर्ग मील के क्षेत्रफल में अमेरिका सरकार ने एक नेशनल पार्क बनवाया है। यहाँ कई यात्री, पर्यटक आते हैं। इनकी सुविधा के लिए, बंगले, होटल वगैरह की भी अच्छी व्यवस्था है।

५. किशोर कुमार अग्रवाल, पटना

आप "दीपावली विशेषांक" की तरह चन्दामामा के "होली अंक" और "पूजा अंक" क्यों नहीं निकालते ?

बहुत से पर्व हैं, किन किन के अपने अंक निकालें।

६. नन्दिनी गुप्ता, कलकत्ता

"चन्दामामा" कौन-सी तारीख तक छपकर तैयार होती है ?

लगभग बीस तारीख तक।

७. अनिल कुमार सूद, भोपाल

क्या आप "झाँसी का किला" पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर चुके हैं ? या करेंगे ?

अभी तो नहीं, हाँ सुविधानुसार करने का विचार अवश्य है।

८. दिलीप कुमार मालपाणि, नईदिल्ली

क्या आप "चन्दामामा" में अरेबियन नाइट्स की कहानियाँ प्रकाशित करेंगे ?

कुछ पहिले ही कर चुके हैं, सुविधानुसार और भी देंगे।

९. विजयकुमार जैन, करधना

आप "चन्दामामा" में विज्ञान सम्बन्धी कहानियाँ क्यों नहीं छापते ?

छाप चुके हैं और छापेंगे।

१०. प्रजपाल सिंह यादव, हृषिकेश

क्या आप "चन्दामामा" में कोई ऐसा स्तम्भ प्रकाशित करना चाहेंगे जिसमें हिन्दी के माध्यम से दक्षिण भारतीय भाषाओं का ज्ञान करवाया जावे ?

सुझाव अच्छा है। हम अवश्य इसकी कार्यान्विति पर विचार करेंगे।

Photo by Prabhakar Mohadik
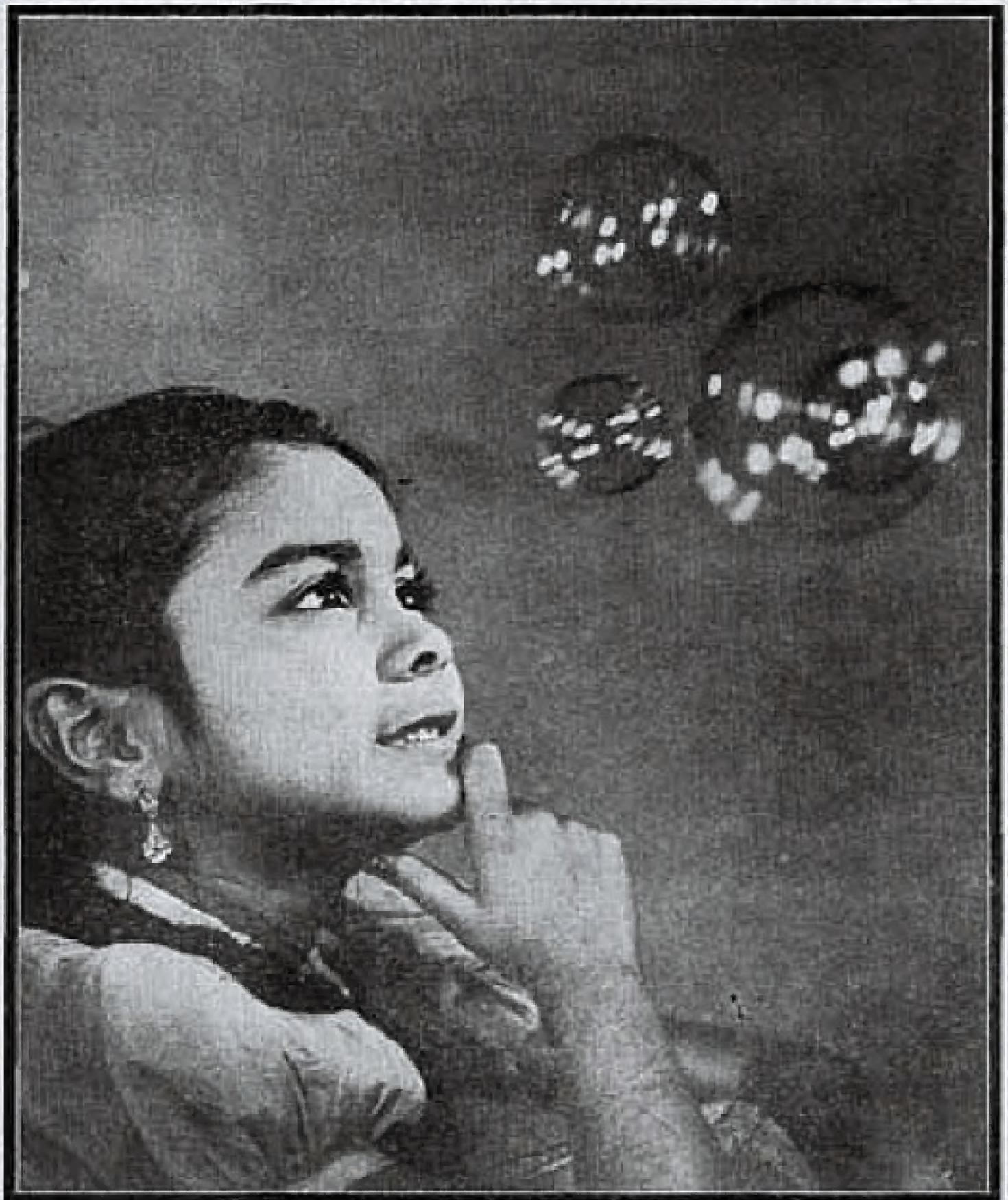
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

साबुन के फूल !

प्रेषिका :
कुमारी शची शर्मा - भिलाई

Photo by Anant Desai

पुरस्कृत परिचयोक्ति

सांबुन के शूल !

प्रेषिका: कुमारी शशी शर्मा - भिवाई

आत्मरक्षण - स्वतन्त्रता ★

[रामतीर्थ कथा]

जब सभ्यता न थी, तब हम भी जन्तुओं की तरह जंगलों में रहा करते थे। जंगल में एक बार एक घोड़े और बारह सिंहे की लड़ाई हुई। उस लड़ाई में बारह सिंहे ने अपनी सींगों से घोड़े को घायल कर दिया। तब घोड़े ने जाकर आदमी के पास शरण माँगी।

"मुझे तुम अपनी पीठ पर सवार होकर ले जाओ। मेरे पास धनुष, बाण वगैरह हैं। उनसे मैं तुम्हारे शत्रु बारह सिंहे को हराकर, तुम्हारी सहायता करूँगा।" मनुष्य ने कहा।

घोड़े ने वैसा ही किया। मनुष्य उस पर सवार होकर गया और उसने बाण से बारह सिंहे को मार दिया।

घोड़े ने मनुष्य के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा—"अब मैं जाऊँगा।"

"कहाँ जाओगे! तुम पर सवार होकर इधर उधर जाने में बड़ी सुभीता हुई। आज से तुम मेरे गुलाम हो।" मनुष्य ने कहा।

इस प्रकार घोड़े अपने योग क्षेम के लिए अपनी स्वतन्त्रता खो बैठा और अपने रक्षक का गुलाम हो गया।